

← एस्कीमो →

(A) निवास क्षेत्र एवं संख्या
(Habitat and number) → आर्कटिक तट पर निवासी

Tundra क्षेत्र (कनाडा का उत्तर, बेफिन डिप, उत्तर अलास्का, रूस का उत्तर, ग्रीनलैंड, इ.प. साइबेरिया) में 60-80 लाख आर्कटिक क्षेत्र में एस्कीमो निवासी हैं। ग्रीनलैंड से ग्रीनलैंड तक 5500 km क्षेत्र में सिर्फ 3600 एस्कीमो हैं।

(B) जलवायु → उपध्रुविय ध्रुवि कंड (EP) जलवायु है। 9 महीने हिमपात होता है। शीतकाल गर्मा, ठंडा (-45°C तक) और ग्रीष्म दौरा, ठंडा (मिमी से कुछ सी अधिक) होता है। Blizzards चल्ती है।

(C) घा.वनस्पति → 2-3 माह के वृष्ण में शैवाल, लियेन, बर्ड, मॉस, फूल वगैरे होते हैं। वृष्ण समाप्त होते ही हिम से ढक जाते हैं।

(D) प्रजाति → इन्हें रैड इण्डियन से एस्कीमो (बच्चा मांस खाते वाला) कहा जाता है। प्र. के अणुको इन्डियन (मानव) कहते हैं। अधिकांश इन्हें रैड इण्डियन प्रजाति का समझे हैं। वस्तुतः ये मंगोलोइड प्रजाति के समझे हैं।

(E) शारीरिक बनावट → सिर लम्बा (dolichocephalic), सिं - सुंबांक 44 से कम, कपाल धारिका कम, काने - मोटे-बड़े, लिये-बाल, न्यपटी-समझोली (Mesochine) नाक, नासिका-सुंबांक 70-85, चौड़ा-लम्बा-शील-नोहरा, शरीर लम्बा, उबरा-जबड़ा, पल्लवुर शीत-रंग-पीला, आंखें छोटी, कंधाई, नेत्र-सुंबांक 90-95, सलबें 8 मुड़ी-संगोत-नेत्र-सोड़ी-बाली, ऊँ. 150-163 cm की होती हैं। काइयाक नाव में बैठे रहने से कमर के नीचे कमजोर होता है। एक वर्ष 0°C।

(F) बिहार → प्रमुख पेशा है।

(i) शीतकालिन बिहार → इस समय नये समुद्र पर जमी बर्फ पर निवास बनाकर सील का शिकार करते हैं। सील के त्वचा लेनेकाले हिम हिम में-ये हड्डी लगा देते हैं। जिसके हिमों ही से हाइफन माले से तैयार करते हैं। इस विधि को "माइपोड" (प्रतिष्ठा करना) कहते हैं। ग्रीनलैंड में "इतिअरपोड" विधि है। जिसमें चारे और हाइफन द्वारा ही एस्कीमो मिलकर सील का शिकार करते हैं।

(ii) उष्णकालिन बिहार → जल-क्षेत्र लुप्त होते हैं। शिकार करने के साथ-साथ सेंकनी शिकार का बिहार हाइफन से मादते हैं।

ऐसे शिकार को 'उद्येड' कहते हैं।

होग, वायरलेस का शिकार नाम पर लकड़ शरीरों
हारफुन से करते हैं। लोज पर चढ़ कर कुत्तों की मदद से
धुविष भाऊ, डीरीब, खिबर को मारते हैं। धुविष मत्स्यी
केस (Muck ox) को कुत्तों से चेर कर मारते हैं।

शिकार की रोज में आवास बहलते रहते हैं।

(iii) शीतकालिन शिकार → इस काल में ये मछी मुहानों पर
निवास करते हैं और और डीरीब, बारह दिनों में दलहन
में फिसाऊद गीर से मारते हैं। बिल्ली, भैरव, ककरव
आदि का शिकार भी करते हैं। बौरा, डीरी से शिकार,
झाड़ आदि मछलियाँ मारते हैं।

(iv) वस → सौल, डीरी की खाल और धुविष भाऊ के खाल के
वस्त्र पहनते हैं। और वस्त्र बनाने हैं। पुण्य खाल का
कोशर वस्त्र पहनते हैं। ऊपर लोपीनुमा दुधला लोग हैं। खाल
और बौरा पर खालक खाल सीरी है। शिवाक के ऊपर "अनोहाड"
पहनते हैं। खाल का पजामा बहरपुप धुरे (धमिड) भी पहनते हैं।
लुपी का पजामा पुरुषों से होय होय है। धुरे
पुरुषों से लम्बे होते हैं। मात्रा "अमाडा" पहनते हैं। जिसकी
पिठ पर लगे घैले से बच्चे को रखते हैं।

मू० श्रीमंत तरह पर सभी नंगे रहते हैं। खाल सि
करते। हड्डी के छिद्र का चरमा पहनते हैं।

(4) खाल-शाल → हड्डी के हड्डी, चाकू, बही, हारफुन, धनुष, बौरी,
लकड़ी या हड्डी के बंडों, गीत की डीरी का उपयोग करते हैं।

(I) परिवहन साधन →

(i) लोज → लकड़ी या रेल की हड्डी, धमड़े की रस्सी, बारह दिनों
के इन्डिय से ली, कुत्तों शायद खिबो जानेवाली इस विधा परिह
की गाड़ी का उपयोग, बर्जिले दुप्ला क्षेत्र में करते हैं।

(ii) काश्चाड → पुरुषों शायद लकड़ी शिकार में प्रमुख। इस गाँव पर
सौल की खाल मछी होती है।

(iii) डमिपड → लुपी शायद वेई जानेवाली यह House boat
कूड़ चौड़ी होती है।

(ग) पृथ्वी → पत्थर, रूई, खाल, बर्फ को पृथ्वी कहते हैं। बर्फ के पृथ्वी (इन्फ्र) गोल गैर हैं। छोटे इन्फ्र से बड़े पृथ्वी हैं। आन्तरिक द्रव फेरी और बर्फ की बंध पृथ्वी की खाल नहीं होती है। प्रकाश और गुरुत्व बल चर्की, बड़ी की कमी से पृथ्वी के लिए जन्म है। शीतल से ताप के समुद्र में रहे हैं।

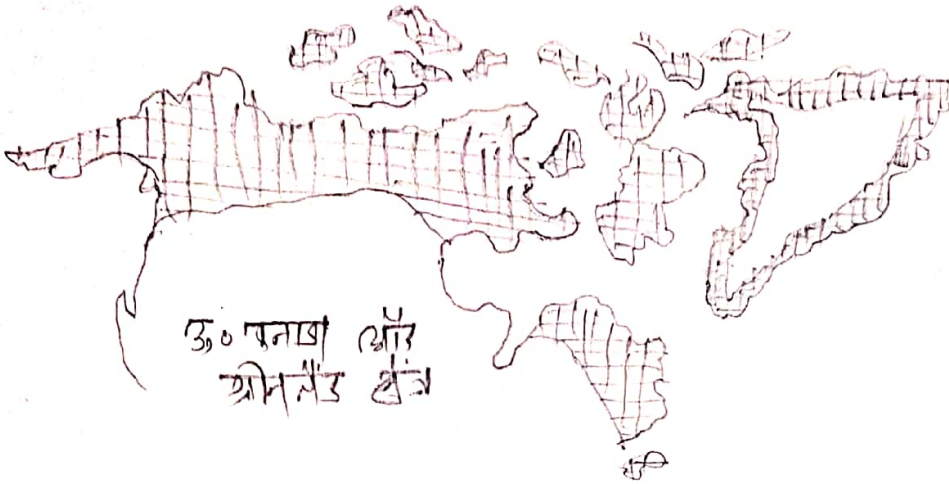
(ख) संस्कृति → विषम परिस्थिति एवं इच्छा के बावजूद ये प्रसन्न रहे हैं। जीवन पिछड़ा है। स्तन मही करे। कुपोषण के कारण शक्ति कम है। चतुर, शिकारी और जानवरों का शिकार लोग हैं। भू-पट्ट में आया है। तैरना (समुद्र में) को प्रकृत हैं।

ये साहसी, निडर, सरल, मधुर स्वभाव के और शक्ति प्रेमी हैं। डेज, चोरी, भ्रष्ट, जाली आदि दुर्गुण मही होते।

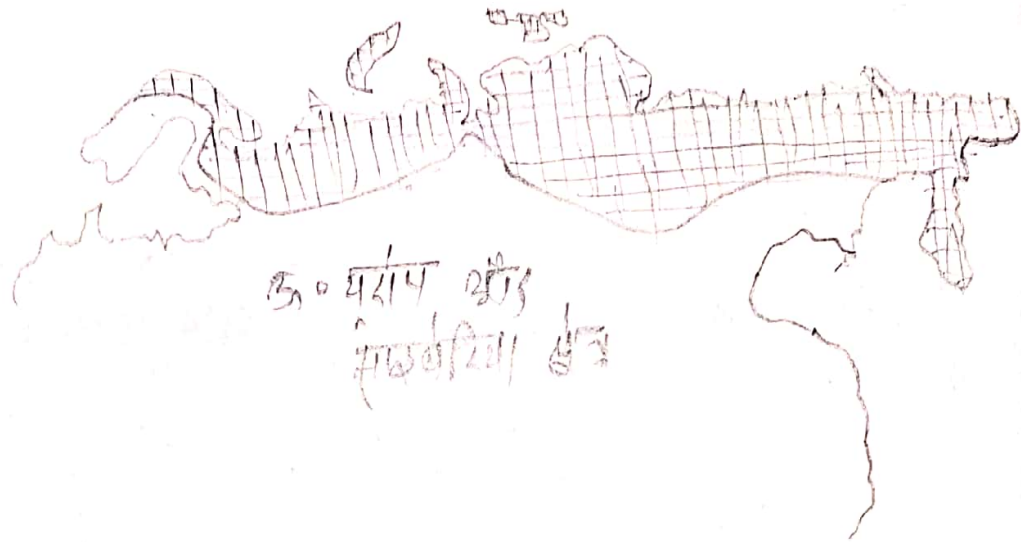
इन पर विषम परिस्थितियों की ह्रास है।

50 "Man is the product of the earth's surface, she has entered into his bones and tissues, into his mind and soul" — Miss E.C. Sempole.

एस्किमो Eskimo



उ० पनषा और
अमीरिउ क्षेत्र



उ० घराप और
सिबेरिया क्षेत्र